International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-04-2020; Accepted: 06-05-2020; Published: 18-05-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 21-27

समकालीन संदर्भ में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययनः जनपद उधम सिंह नगर के थारू जनजाति के विशेष संदर्भ में

रवि कान्त कुमार
पोस्ट डॉक्टरल रिसर्च स्कॉलर, (आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली), शोध केन्द्रः समाजशास्त्र विभाग, राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
समकालीन वैश्विक समाज वैश्वीकरण एवं संचार क्रांति के दौर से गुजर रहा है। यह वह दौर जिसने समस्त समुदाय को विविध रूपों में संक्रमित करने का कार्य किया है। संक्रमण का यह दौर एक ओर जहां विविध पारंपरिक बंधनों से मुक्त कर एक नई दुनियां से रू–ब–रू कराने का कार्य किया है, वहीं दूसरी ओर इसने अनेक ऐसी संस्कृति को भी लुप्तप्राय स्थिति में लाने का कार्य किया है, जो कभी किसी एक समुदाय या क्षेत्र की पहचान हुआ करती थी। थारू समुदाय जो भारत एवं नेपाल के सीमावर्ती तराई भावर के क्षेत्रों में निवासरत है, पर भी बदलते समय का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। भारत में इसका मुख्य निवास स्थान उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं बिहार के नेपाल के समीपवर्ती जनपदों में है। आज जबकि सम्पूर्ण भारतीय समाज में वर्षों तक हासिए पर रहे महिलाओं के उत्थान के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर विविध प्रयत्न किए जा रहे हैं, ऐसे में थारू समाज की महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तन का मूल्यांकन करना आवश्यक प्रतीत होता है। ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि अनेक मानवशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रिों के शोध से यह ज्ञात होता है कि इनकी उत्पति काल से ही महिलाओं की स्थिति पुरूषों की तुलना में उच्च रही है। बावजूद इसके समकालीन समय में महिलाओं के सामाजिक उत्थान हेतु किए जा रहे प्रयासों में अपेक्षित सफलता प्राप्त होते दिखाई नहीं देता है। क्योंकि यह समुदाय उत्तराखण्ड से लेकर बिहार तक एक विस्तृत भौगोलिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में फैला हुआ है, इसलिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है कि इस अध्ययन को एक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिक्षेत्र में सीमित कर इसका अध्ययन किया जाए। भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सीमाओं का सीमांकन किया जाना इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि एक ओर जहां बदलती सांस्कृतिक सीमाओं के साथ महिलाओं की स्थिति एवं विचारधाराओं में बदलाव आ जाता है वहीं राज्य की सीमाओं के बदलते ही संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति में भी बदलाव आ जाता है। इसी कारण प्रस्तुत अध्ययन कार्य हेतु ''समकालीन संदर्भ में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 'जनपद उधम सिंह नगर के थारू जनजाति के विशेष संदर्भ में'' शीर्षक विषय का चयन किया गया है। इस कार्य हेतु अध्ययन क्षेत्र के रूप में जनपद उधम सिंह नगर के विकास खण्ड खटीमा एवं सितारगंज के ग्राम श्रीपुर विचवा तथा पहेनिया का चयन किया गया है तथा इस ग्राम से सोद्देश्य निदर्शन प्रणाली द्वारा 25–25 परिवारों को अध्ययन निदर्श के के रूप में चुना गया है। इनसे प्राप्त आंकड़े तथा अन्य द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष का आलेखन किया गया है।

मुख्य शब्द – रूढ़िवाद, प्रस्थिति, उपभोक्तावादी संस्कृति, नवजागरण, मातृ सत्तात्मक, नगरीकरण, औद्योगीकरण, सीमांत कामगार, संयुक्त एवं एकाकी परिवार

प्रस्तावना
समकालीन समय में सम्पूर्ण विश्व विकास की एक अनोखी दौड़ में प्रतिभाग कर रहा है। जिसका उद्देश्य अपने क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करना है। इस कार्य को अमलीजामा पहनाने के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है कि उस क्षेत्र या राष्ट्र की प्राकृतिक सम्पदा के साथ–साथ सम्पूर्ण मानव श्रम शक्ति को सुनियोजित तरीके से उपयोग में लाया जाए। भारत जैसे विविध सांस्कृतिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि वाले राष्ट्र के लिए यह कदम और भी अधिक आवश्यक है। क्योंकि इस प्रदेश में अलग–अलग धार्मिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यताओं के आधार पर विविध रूढ़िवादी प्रथाएं एवं विचारधाराएं प्रचलित रही हैं। जिसके कारण वर्षों तक समाज का एक महत्वपूर्ण अंग हासिए पर अपने सुनहरे भविष्य की आश लगाए घुटन भरी जिंदगी जीती रही है। जिसकी प्रमाणिकता इतिहास के पन्नों में दर्ज उनकी दास्तां से होती है। वैदिक कालीन समाज जहां महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक मानी जाती है, के बाद के काल से लेकर अब तक चाहे समाज कोई भी हो, महिलाएं वर्षों तक अपने मानवीय अधिकारों से वंचित तथा विविध रूपों में शोषित एवं उपेक्षित ही रही है। नवजागरण काल के दौरान महिलाओं समेत समाज के विविध शोषित एवं उपेक्षित वर्ग के सदस्यों के उत्थान के लिए अनेक प्रयास आरंभ किए गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस दिशा में कारगर कदम उठाए जाने हेतु संविधान में अनेक प्रावधान किए गए। इसके माध्यम से महिलाओं को समाज बेहतर जीवन यापन हेतु मौलिक अधिकार तथा आरक्षण का सहारा मिला। इस सहारे की लाठी थाम आज महिलाओं ने हर क्षेत्र में खुद को पुरूषों के समान तथा कई अवसर पर उससे बेहतर साबित किया है। यही कारण है कि आज महिलाओं को हर उस क्षेत्र में मजबूती के साथ खड़ा देखा जा सकता है, जहां कुछ समय पूर्व तक पुरूषों का एकाधिकार हुआ करता था। इस प्रकार की बदलती परिस्थिति ने महिलाओं के प्रति समाज के नजरिये में भी परिवर्तन लाने का कार्य किया है तथा उसकी सामाजिक स्थिति पूर्व से बेहतर हुई है। लेकिन आज भी समाज की यह चमकती तस्वीर का दायरा सीमित क्षेत्रों तक ही है। वह समाज जो भौगोलिक रूप से दुर्गम क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं या शहरी क्षेत्रों से अलग दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं, की तस्वीर कुछ और ही बयां

करती है। प्रस्तुत शोध पत्र समाज के इन्हीं तस्वीरों पर प्रकाश डालने के लिए किया गया एक शोध कार्य है। क्योंकि समाज में आज भी विकास की मुख्य धारा से वंचित समुदायों की सूची बहुत लम्बी है जिसका अध्ययन सीमित समय में महत्व के आधार किया जाना नामुमकिन नहीं तो टेढ़ी–खीर अवश्य है। इन्हीं कारणों से प्रस्तुत कार्य को थारू जनजाति की महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर केन्द्रित कर किया गया है। यही कारण है कि थारू जनजाति की महिलाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति पर चर्चा करने से पूर्व इस बात को स्पष्ट करना अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है कि जनजाति किसे कहते है तथा प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सामाजिक प्रस्थिति से क्या अभिप्राय है।

जनजातीय समाज आज के बदलते दौर में भी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है। आज जबकि संस्कृतीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से प्रभावित होकर अनेक संस्कृतियां लुप्त हो चुकी है जबकि कई संस्कृतियां अपनी अंतिम सांसे गीन रही है। ऐसे समय में भी जनजातीय समाज अपने सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण एवं संवर्द्धन में बहुत हद तक सफल रही है। ये और बात है कि यातायात के बदलते स्वरूप तथा संचार क्रांति ने आज इस समाज को भी संक्रमण कालीन दौर से रू–ब–रू कराने का कार्य किया है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वभाविक है कि जनजाति किसे कहते हैं? जनजाति शब्द का प्रयोग सामान्य तौर पर उस समुदाय के लिए किया जाता है, जो मुख्य समाज से दूर दुर्गम क्षेत्रों में निवास करती है। इसे आदिवासी या बनवासी के नाम से भी संबोधित किया जाता है। इसकी एक सामान्य भाषा होती है तथा यह एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करती है। एक भौगोलिक क्षेत्र एवं भाषा होने के कारण इसकी संस्कृति भी लगभग समान होती है। जनजाति शब्द एक ऐसा शब्द है जिसे विभिन्न मानवशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों ने अपने अपने तरीके से स्पष्ट करने का प्रयास किया है लेकिन अभी तक कोई सर्वमान्य मत प्रस्तावित किया जाना संभव नहीं हो पाया है। मजूमदार ने जनजाति शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है ''एक जनजाति परिवार एवं परिवारों के समूहों का संकलन है जो एक सामान्य के द्वार पहचाना जाता है। जिसकी एक सामांन्य भाषा है, जिसके सदस्य एक सामान्य भूभाग में रहते हैं तथा व्यवसाय, विवाह एवं आर्थिक कार्यों में कुछ निषेधों का पालन करते हैं। साथ ही साथ दायित्वों के क्षेत्र में पारस्परिक आदान–प्रदान की संगठित व्यवस्था का निर्माण करते हैं।'' सामाजिक प्रस्थिति शब्द का सामान्य तात्पर्य संबंधित समाज में उन्हें मिलने वाले सामाजिक सम्मान, प्रतिष्ठा, अधिकार से है। प्रस्थिति शब्द को विभिन्न समाजशास्त्रीयों ने भी अपने अपने तरीके से परिभाषित किया है। सेकार्ड एवं बकमैन ने प्रस्थिति शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा है ''प्रस्थिति समूह अथवा व्यक्तियों के वर्ग द्वारा अनुमानित किसी व्यक्ति का मूल्य है।'' इस संदर्भ में रॉबर्ट बीरस्टीड का मानना है कि ''किसी समूह अथवा समाज की सामाजिक संरचना में प्रस्थिति एक सामाजिक रूप से परिभाषित स्थिति होती है। यह समूह में व्यक्ति के स्थान को बताती है। उस समाज विशेष में व्यक्ति को प्रस्थिति के आधार पर ही मान मिलता है।'' मजूमदार ने प्रस्थिति को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''प्रस्थिति का अर्थ समूह में व्यक्ति की स्थिति, पारस्परिक दायित्वों एवं विशेषाधिकारों, कर्तव्यों तथा अधिकारों के सामाजिक ताने–बाने में उसके पद से है।'' इस प्रकार अलग–अलग विचारकों के द्वारा प्रस्थिति के संदर्भ में व्यक्त किए गए विचारों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्थिति शब्द के अंतर्गत कुछ विशिष्ट अधिकार समाहित है। यह वह अधिकार है जिसका संबंध समाज में व्यक्ति के जीवन–यापन और रहन–सहन के तरीके का निर्धारण करती है। यही कारण है कि आज सरकार एवं समाज सुधारकों का एक बड़ा वर्ग वर्षों तक अपने अधिकारों से वंचित जनजातीय महिलाओं के सामाजिकउत्थान हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं। इन प्रयासों के कारण ही आज इनकी उपस्थिति अपने पारंपरिक कार्यो से अलग क्षेत्रों में भी देखी जा रही है।

थारू जनजाति उत्तराखण्ड के तराई की प्रमुख जनजाति है। थारू जनजाति की उत्पति के संबंध में विविध मत प्रचलित है। विभिन्न मानवशास्त्रीयों एवं समाजशास्त्रियों के द्वारा किए गए अध्ययन, ऐतिहासिक साक्ष्यों, रहन–सहन के तरीकों तथा इस जनजाति के लोगों की मान्यताओं के आधार पर अलग अलग बातें उभरकर सामने आती है। नैसफील्ड ने थारू शब्द की उत्पत्ति थार शब्द से माना है। थार शब्द का अर्थ स्थानीय बोली में जंगलवासी से लगाया है। 1970 तक वर्तमान थारू जनजाति का निवास क्षेत्र घनघोर जंगलों से आच्छादित था तथा यह जनजातियां सदियों से जंगलों व उनके समीप के क्षेत्रों में निवास करती आयी है। जहां तक जनजातीय महिलाओं की प्रस्थिति का प्रश्न है, उनकी प्रस्थिति प्रत्येक जनजाति में अलग–अलग है। एक ओर मातृ सत्तात्मक संगठन के अंतर्गत आने वाले जनजातीय समुदायों में महिलाएं सामान्य रूप से उच्च प्रस्थिति का उपयोग करती दिखायी देती हैं, तो दूसरी ओर पितृ सत्तात्मक जनजातीय समाजों में स्त्रियों की प्रस्थिति स्वतंत्र भारत से पूर्व की भारतीय महिलाओं की प्रस्थिति को अभिव्यक्त करती दिखायी देती है। गारो, खासी, टोडा आदि मातृ प्रधान जनजातियां महिलाओं की प्रधानता का प्रतीक है तो दूसरी तरफ भील, मुण्डा, संथाल, हो, जौनसारी, थारू, बुक्सा आदि जनजातियां किसी न किसी रूप में पुरूषों के सापेक्ष महिलाओं की निम्न प्रस्थिति का परिचायक है। थारू एवं बुक्सा जनजाति के महिलाओं की प्रस्थिति सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में तो श्रेष्ठ मानी जा सकती है लेकिन आर्थिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में यह अभी भी पिछड़ी हुई है। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि थारू जनजाति में महिलाओं को आरंभिक समय से ही उच्च सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त थी। इस विचारधारा के समर्थकों का यह मानना है कि थारू जनजाति महाराणा प्रताप के वंशज हैं। इसकी उत्पति के संदर्भ में यह कहा जाता है कि जब मुगलों और राजपूत राजाओं के बीच युद्ध हुआ तथा इस युद्ध में राजपूत राजाओं की हार हुई तब राजपूत रानियां अपने वफादार सेवकों के साथ जंगल भाग गयी तथा कुछ समय बाद इन सेवकों से शादी कर एक नए सिरे से पारिवारिक जीवन की शुरूआत की। यही समुदाय आगे चलकर थारू के नाम से जाना जाने लगा। इस जनजाति के महिलाओं की पारंपरिक रहन–सहन तथा श्रृंगाार के तरीकों से भी यह प्रतीत होता है कि आरंभिक समय में इनकी सामाजिक स्थिति पुरूषों की अपेक्षा उच्च रही है। बावजूद इसके विगत कुछ दशकों में जबकि सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर महिला सशक्तिकरण की अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है, थारू जनजाति की महिलाओं की स्थिति सभ्य समाजों की तुलना में दयनीय बनी हुई है। इसका कारण यह माना जाता है कि किसी भी जनजाति की महिलाओं के सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक उत्थान की कोई भी योजनाएं अथवा कार्यक्रम तब तक सफल नहीं हो सकता है, जब तक कि उसका जनजाति व्यवस्था के सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों से सामंजस्य स्थापित न हो जाए। एस. सी. दुबे के अनुसार 'विकास योजनाओं को प्रभावपूर्ण बनाने हेतु एक समुदाय विशेष को सामाजिक – सांस्कृतिक व्यवस्था का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि इन विकास कार्यक्रम के आर्थिक चरों के साथ–साथ सामाजिक – सांस्कृतिक चर भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। इन्हीं कारणों से आज के दौर में यह जानना अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि समय के साथ बदलती परिस्थितियों के कारण जनजातीय महिलाओं और खासकर थारू महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में क्या परिवर्तन हुआ है।

अध्ययन की प्रासंगिकता

थारू जनजाति भारत एवं नेपाल में पायी जाने वाली एक जनजातीय समुदाय है। यह मूल रूप से नेपाल – भारत सीमा से सटे जनपदों के तराई वाले क्षेत्रों में निवास करती आई है। विगत कुछ दशकों में यह उन जनजातीय़ समुदायों में शामिल हो गया है जिनका निवास स्थान समाज के मुख्य धारा से जुड़े समाजों के निकट है। ऐसे में यह माना जाता है कि इस समाज को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना अपेक्षाकृत सरल है। बावजूद इसके यह समाज और खासकर इस समाज की महिलाएं आज न तो अपने अधिकारों के प्रति जागरूक प्रतीत होती है और न ही अपेक्षित रूप में सरकारी एवं गैर सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में सफल हो पायी है। नए राज्य के रूप में नवम्बर 2000 में अस्तित्व में आने के बाद प्रदेश में निवास करने वाली थारू जनजाति की महिलाओं के सामाजिक स्थिति में अपेक्षित रूप से कुछ विशेष सुधार आया है, ऐसा प्रथम दृष्टि में प्रतीत नहीं होता है। यही कारण है कि प्रस्तुत शोध पत्र के लिए इस विषय का चयन किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना बेहद आसाान हो जाएगा कि आखिर सभ्य या विकास की मुख्य धारा से जुड़े समाजों के नजदीक होने के बावजूद योजनाओं का अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाने का कारण क्या है। यह न केवल उस समुदाय से जुड़े लोगों के लिए आवश्यक है बल्कि एक विकासशील लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए यह समय की मांग बन चुकी है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

1. थारू महिलाओं की बदलती कार्य पद्धति तथा उसके सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. थारू महिलाओं की बदलती शैक्षिक स्थिति तथा परिवार की प्रकृति के संबंध में उनकी मनोवृति में आए बदलाव का अध्ययन करना।
3. थारू जनजातीय परिवारों में घरेलु निर्णय लेने में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तराखण्ड एक पर्वतीय प्रदेश है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु इस अध्ययन क्षेत्र के चयन के पीछे का कारण यह है कि सन् 2000 में इसके अस्तित्व में आने के बाद से औद्योगिक केन्दों, पर्यटन तथा शिक्षण संस्थानों की स्थापना एवं विकास की दर में अचानक तीव्र परिवर्तन आया है। इसके कारण यहां की सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियां तेजी से बदली है। यहां की प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक विविधता हमेशा से आकर्षण का केन्द्र रही है। यह क्षेत्र देश के उत्तर पश्चिम में स्थित है, जो उत्तर में तिब्बत हिमालय (चीन), पश्चिम में टोंस नदी (हिमाचल प्रदेश), पूर्व में काली नदी (नेपाल), तथा दक्षिण में तराई क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र का भौगोलिक विस्तार $28^{0}43'$ उत्तर से $31^{0}27'$ उत्तरी अक्षांस तथा $77^{0}34'$ पूर्व से $81^{0}02'$ पूर्वी देशांतर तक फैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल 53,484 वर्ग किलोमीटर है जो पूर्व से पश्चिम (लम्बाई) 358 किमी तथा उत्तर से दक्षिण (चौड़ाई) 320 किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है। 2011 के जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 1,01,16,752 है जिसमें 51,54,178 पुरूष तथा 49,62,574 स्त्रियाँ हैं। इस राज्य की साक्षरता दर 79.63 प्रतिशत है जिनमें पुरूषों की साक्षरता दर 88.33 प्रतिशत तथा स्त्रियों की साक्षरता दर 70. 70 प्रतिशत है। वर्तमान समय में इस प्रदेश में मूल रूप से पॉच जनजातियां निवास करती है–जौनसारी, भेटिया, थारू, राजी और बुक्सा। 2011 की जनगणना के अनुसार इनकी जनसंख्या का विवरण सारणी संख्या 01 में किया गया है।

सारणी संख्या 01: उत्तराखण्ड में निवासरत जनजातियों की कुल जनसंख्या तथा उसमें महिलाओं की जनसंख्या का वर्गीकरण

क्रम.सं0	जनजातियों का नाम	कुल जनसंख्या	महिलाओं की जनसंख्या
01	थारू	91342	45458
02	जौनसारी	88664	42644
03	बुक्सा	54037	26201
04	भोटिया	39106	19938
05	राजी	690	324

सारणी संख्या 01 से स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रदेश स्तर पर थारू जनजाति की जनसंख्या सर्वाधिक है। इतना ही नहीं इसका प्रदेश में मूल निवास स्थान जनपद उधम सिंह नगर के विकास खण्ड खटीमा एवं सितारगंज है। सितारगंज औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया है। इस कारण इस क्षेत्र में विविध संस्कृति के लोगों का आवागमन बढ़ा है। इससे इस क्षेत्र में सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर अनेक योजनाओं को क्रियान्वित किया गया है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन के महत्व एवं उसकी प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए इसके सफल सम्पादन हेतु सर्वप्रथम अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन मौलिक रूप से प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है। यही कारण है कि अध्ययन आरंभ करने से पूर्व अध्ययन क्षेत्र का चयन किया गया है। इस प्रकार चयनित क्षेत्र में निवासरत समस्त थारू महिलाएं इस अध्ययन के समग्र है। इस अध्ययन समग्र से सोद्देश्य निदर्शन पद्धति द्वारा दोनों विकास खण्ड के एक–एक गांव श्रीपुर विचवा तथा पहेनिया से क्रमशः 25–25 परिवारों का चयन किया गया है। इस प्रकार चयनित परिवारों से एक – एक महिलाओं को अपने निदर्श के रूप में चुना गया है। इस चयनित निदर्श से तथ्य संकलित कर उसका वर्गीकरण एवं विश्लेषण कर निष्कर्ष का आलेखन किया गया है।

तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन कार्य थारू महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव पर केन्द्रित है। आरंभिक समाज में किसी व्यक्ति की प्रस्थिति का निर्धारण उसकी चारित्रीक स्थिति, जाति तथा लिंग के आधार पर होता था। लेकिन औद्योगीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव ने व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारक कारकों में आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति को महत्वपूर्ण बना दिया है। आजादी के बाद और खासकर विगत तीन दशकों में आए तीव्र बदलाव ने समाज विचारधारा को बदलने का कार्य किया है। आज महिलाओं को न केवल अपने पारंपरिक कार्य से परे अन्यत्र कार्य करने की आजादी है बल्कि आज कई समाजों में उनके विचारों को घरेलु निर्णय में भी स्थान दिया जाने लगा है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र हेतु प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए चयनित

महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, परिवार के प्रकार के प्रति उनकी मनोवृति, बदलते समय के साथ परिवार की प्रकृति के प्रति उनके विचारों में आए परिवर्तन को जानने के लिए उनकी आयु संरचना आदि प्रश्नों को समाहित किया गया है। आज के दौर में प्रदेश स्तर पर थारू जनजातीय महिलाओं के रोजगार की स्थिति के आकलन के लिए द्वितीयक ऑकड़ों का संकलन किया गया है। यह आंकड़े इस तथ्य के उजागर में सहायक होगा कि इस समाज की महिलाएं अपने पारंपरिक कार्य से अलग क्षेत्रों में किस प्रकार अपने कदम मजबूती से आगे बढ़ा रही है। यह न केवल इनके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए आवश्यक है बल्कि यह आज किसी भी व्यक्ति के सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारण मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन संकलित तथ्यों को उनकी प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत कर उसका विश्लेषण किया गया है। क्योंकि हमें इस बात पर विशेष ध्यान आकर्षित करना है कि उम्र का परिवार की प्रकृति के प्रति मनोवृति निर्धारण में तथा परिवार की प्रकृति का सदस्यों की समानता एवं सहभागिता के स्तर पर विशेष प्रभाव पड़ता है। इस कारण इन दोनों तथ्यों के मध्य पाए जाने वाले सहसंबंध को तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

थारू जनजाति अपने आरंभिक समय से ही तराई के जंगलों तथा उसके निकटस्थ क्षेत्रों में निवास करता आया है। आरंभिक समय में इनका मुख्य कार्य कृषि से जुड़े विभिन्न कार्य तथा मछली पकड़ना था। इस समुदाय की महिलाएं घरेलु कार्य के अतिरिक्त कृषि कार्य में भी मदद करती थी। इनमें शिक्षा का स्तर अत्यन्त निम्न था। इस कारण आज के दौर में भी अन्य महिलाओं की अपेक्षा इस समाज की महिलाओं की आय का मुख्य स्रोत पारंपरिक कार्य से ही जुड़ा हुआ है। सन् 2011 की जनगणना से प्राप्त आंकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि आज महिलाएं अपनी योग्यता के अनुरूप पारंपरिक कार्य से अलग विभिन्न कार्यों में संलिप्त है। इन कामगारों का उसके कार्य की प्रकृति के आधार पर जिसमें सीमांत एवं मुख्य कामगार दोनों शामिल हैं, का वर्गीकरण सारणी संख्या 02 में किया गया है

सारणी संख्या 02: कामगार थारू महिलाओं के कार्य की प्रकृति तथा उसका शैक्षिक स्तर

कार्य की प्रकृति		शैक्षिक स्तर					
		निरक्षर	साक्षर (माध्यमिक से कम)	माध्यमिक / उच्च. माध्य.	डिप्लोमा तकनीकी	स्नातक एवं उच्च शिक्षा	तकनीकी स्नातक एवं उच्च शिक्षा
मुख्य कामगार	01	3599	2520	382	03	86	02
	02	104	200	94	02	90	12
	03	08	15	26	00	28	04
	04	00	02	02	00	06	00
	05	30	09	00	00	00	00
	06	06	02	00	00	00	00
	07	328	354	106	02	28	00
योग		4075	3102	610	07	238	18
सीमांत कामगार	01	3901	4124	1048	00	289	05
	02	02	08	12	00	12	02
	03	86	72	06	00	00	00
	04	00	00	00	00	00	00
	05	64	24	02	00	00	00
	06	00	00	00	00	00	00
	07	272	424	160	00	46	00
योग		4325	4652	1228	00	347	07
कुल योग		8400	7754	1838	07	585	25

स्रोतः censusindia.gov.in 05.04.2020

1. कृषि, वानिकी एवं मत्स्य पालन 2. शिक्षा, मानव स्वास्थ्य और सामाजिक कार्य गतिविधियाँ 3. प्रशासनिक और सहायता सेवा गतिविधियाँ, लोक प्रशासन और रक्षा, अनिवार्य सामाजिक सुरक्षा 4. वित्तीय और बीमा गतिविधियाँ, रीयल एस्टेट गतिविधियाँ, पेशेवर 5. निर्माण 6. बिजली, गैस, भाप और एयर कंडीशनिंग आपूर्ति, जल आपूर्तिय (सीवरेज एंड वेस्ट मैनेजमेंट एंड रेमेडिएशन एक्टिविटीज) 7. अन्य सभी क्षेत्र जिनमें थारू महिलाएं कार्यरत हैं। (क्रम संख्या 1 से 6 को छोड़कर)

शिक्षा समाज का आईना है। जिस समाज में शिक्षा की स्थिति जितनी बेहतर होती है, समाज उतना ही अधिक समृद्ध होता है। यह न केवल चारित्रीक एवं आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है वरन् शिक्षा मानव के आंतरिक गुणों को प्रस्फुटित एवं विकसित होने का अवसर भी प्रदान करती है। शिक्षा किसी व्यक्ति का एक ऐसा मित्र एवं गुरू है जो उसे अपने परिवेश से अनुकूलन स्थापित कर भावी चुनौतियों से निपटने की कला सिखाती है। यही कारण है कि इसे व्यक्ति के समाजीकरण का प्रमुख अभिकरण माना जाता है। आधुनिक समय में तकनीकी एवं सूचना तंत्र के अभूतपूर्व विकास ने शिक्षा के उद्देश्यों में बड़े पैमाने पर बदलाव के लिए मजबूर किया है। वर्तमान समय में औद्योगीकरण एवं मशीनीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण ही राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परंपरागत शिक्षण पद्धति की जगह व्यवसायिक एवं तकनीकी कौशल विकास पर आधारित शिक्षण पद्धति ने ले लिया है। आज के औद्योगिक एवं तकनीकी समाज में व्यक्ति की शैक्षणिक प्रस्थिति उसकी व्यवसायिक सहभागिता को सुनिश्चित करती है। व्यवसाय विशेष में संलग्न लोगों में निहित शैक्षिक भिन्नता का प्रभाव उसकी कार्य कशुलता एवं कार्य सम्पादन की स्थिति में भी दिखाई पड़ता है। यह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति की मानसिक स्थिति को प्रभावित करती है। यही कारण है कि आज के दौर में महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। शिक्षा के इन्हीं महत्व के कारण प्रस्तुत अध्ययन कार्य के दौरान उत्तरदाता की शैक्षिक योग्यता को महत्व प्रदान करते हुए इससे जुड़े तथ्यों का संकलन किया गया है। इन संकलित तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण सारणी संख्या 03 में किया गया है।

सारणी संख्या 03: उत्तरदाताओ का शैक्षिक स्तर

क्रम सं.	शैक्षिक स्तर	मनोवृत्ति	
		आवृति	प्रतिशत
01	निरक्षर	05	10
02	प्राइमरी	03	06
03	हाई स्कूल	02	04
04	इंटर	17	34
05	स्नातक	08	16
06	स्नातकोत्तर	11	22
07	अन्य	04	08
08	योग	50	100

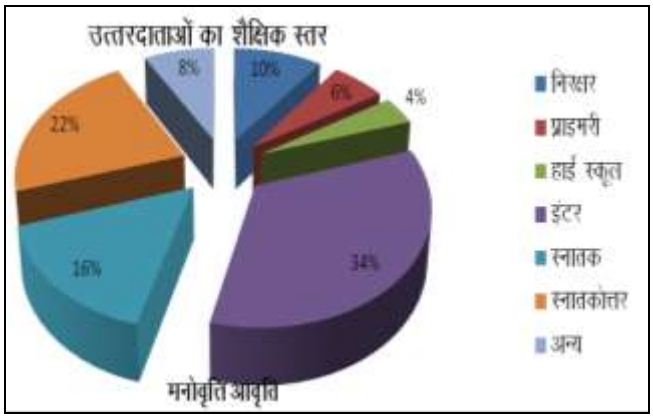

सारणी संख्या 03 के वर्गीकरण से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि उत्तरदाताओं के चयन में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि निरक्षर से लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों का प्रतिनिधित्व हो सके। ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति की शैक्षिक स्थिति एवं उसकी सोच में गहरा संबंध होता है। इसमें सर्वाधिक 38 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक एवं इससे उच्च शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं। 44 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक से निम्न स्तर की शैक्षिक स्थिति से संबंधित है। 10 प्रतिशत निरक्षर तथा 08 प्रतिशत उच्च शिक्षा से जुड़े डिप्लोमा या व्यवसायिक कोर्स किए हुए हैं।

उम्र किसी व्यक्ति की उस समयावधि अर्थात् दिन को दर्शाती है, जो उसने अपने जन्म के वक्त से लेकर वर्तमान समय तक में गुजारी या व्यतीत की है। इसके आधार पर पर ही व्यक्ति की सामाजिक दायित्वों का निर्धारण किया जाता है, जो उसके सामाजिक प्रस्थिति के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। एक ओर जहाँ शिशु और बालक अपने भरण–पोषण के लिए पूर्णतः परिवार और समाज पर आश्रित होता है वहीं युवा और प्रौढ़ व्यक्ति समाज के लिए अपने क्रियात्मक व्यवहारों के सन्दर्भ में पूर्णतः उत्तरदायी माने जाते हैं। परिवार, समुदाय, सामाजिक संस्थाओं आदि में व्यक्ति की प्रस्थिति एवं भूमिका के निर्धारण में उसकी उम्र को ही प्रमुख निर्धारक अभिकरण माना जाता है। व्यक्ति के सामाजीकरण की प्रक्रिया भी उसकी उम्र में वृद्धि के साथ–साथ पूर्णता की ओर अग्रसर होती है। वैयक्तिक अंतर्क्रिया तथा सामाजिक संबंध और व्यक्तित्व निर्माण व्यक्ति की उम्र से संबंधित होकर एक निश्चित अर्थबोध प्रदान करता है।

परिवार के स्वरूप का व्यक्ति की मानसिक स्थिति से गहरा संबंध पाया जाता है। यह न केवल व्यक्ति के विकास से संबंधित अवसरों को प्रभावित करती है बल्कि व्यक्ति की भूमिका एवं जिम्मेदारी की जटिलता भी इससे प्रभावित होती है। यही कारण है कि आज संयुक्त परिवार बहुत तेजी से टूटकर एकाकी परिवार में परिणत हो रहे हैं। संयुक्त परिवार टूटने के यूं तो बहुत से कारक बताये जा सकते हैं, लेकिन जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है उनमें एक तो रोजगार की तलाश में प्रवासित जीवन जीने को मजूर होना है तथा दूसरा कारक है व्यक्ति की बदलती विचारधारा। आज अक्सर देखा जाता है कि व्यक्ति शादी करने के पश्चात एकाकी परिवार बनाकर जीवन व्यतीत करना पसंद करते हैं। एकाकी परिवार आधुनिक समाज में आए बदलाव की देन है, जिसमें व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र महसूस करता है। इसकी संख्या पारंपरिक संयुक्त परिवार की तुलना में तीव्र गति से बढ़ी है।

उपर्यक्त महत्व के आधार पर ही प्रस्तुत अध्ययन कार्य के सम्पादन हेतु उत्तरदाताओं की आयु एवं उसके परिवार के स्वरूप के संबंध में तथ्यों का संकलन किया है। इस कार्य के दौरान चयनित गॉव से 19 संयुक्त एवं 31 एकाकी परिवारों का चयन किया गया है। साथ ही इन परिवारों से विभिन्न आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। इस प्रकार संकलित तथ्यों में से उत्तरदाता की आयु के आधार पर उसके परिवार के स्वरूप के प्रति मनोवृति का अध्ययन किया गया है, जिसका वर्गीकरण सारणी संख्या 04 में किया गया है।

सारणी संख्या 04: आयु संरचना एवं परिवार के स्वरूप के प्रति उत्तरदाताओं की मनोवृति

क्रम संख्या	परिवार का स्वरूप	आयु संरचना				
		20 से कम	20 – 39	40 – 59	59 से अधिक	योग
01	संयुक्त	02	07	06	04	19
02	एकाकी	05	17	07	02	31
योग		07	24	13	06	50

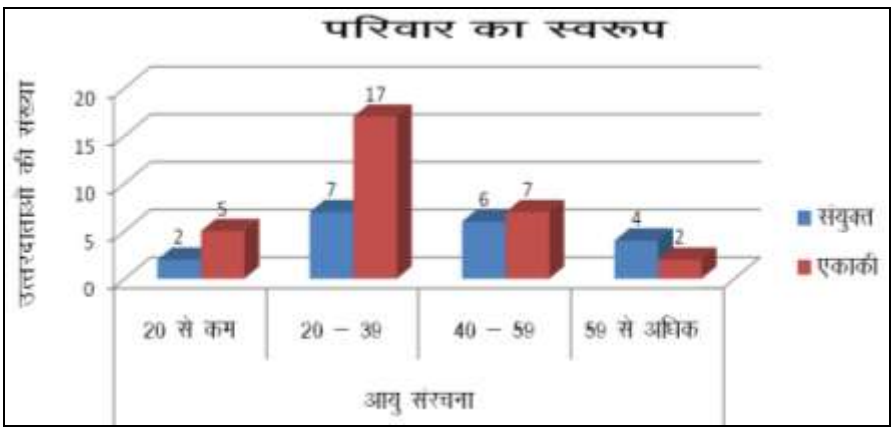

सारणी संख्या 04 के अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि संयुक्त परिवार को पसंद करने वाले अधिकांश उत्तरदाता 40 वर्ष या इससे अधिक आयु वर्ग के हैं जबकि इससे कम आयु वर्ग वाले अधिकांश उत्तरदाता एकाकी परिवार को अपना पसंदीदा परिवार के रूप के रूप में स्वीकार करते हैं। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि बदलते समय के साथ परिवार के स्वरूप के प्रति लोगों की मनोवृति में बदलाव आया है।

भारतीय पारिवारिक संरचना मूल रूप से दो स्वरूपों में विभक्त है– पहला संयुक्त परिवार तथा दूसरा एकाकी परिवार। संयुक्त परिवार परंपरा से भारतीय समाज की पहचान रही है। इस प्रकार के परिवार में घर का बुजुर्ग घर का मुखिया होता है तथा घर के सारे निर्णय उनके द्वारा ही लिए जाते हैं। आम तौर पर परिवार का बुजुर्ग पुरूष ही परिवार का मुखिया होता है लेकिन कई अवसरों पर परिवार की स्त्रियों को भी यह जिम्मेदारी निभाती पड़ती है। एकाकी परिवार संयुक्त परिवार के टूटने के कारण अस्तित्व में आया है। इसमें मूल रूप से पति–पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे निवास करते हैं। ऐसे परिवार में पुरूष एवं महिला दोनों स्वतंत्र महसूस करते हैं। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के दौर में इंसानी आवश्यकताएं जिस गति से बढ़ी है, यह भी अप्रत्यक्ष रूप से एकाकी परिवार के बढ़ने का करण बन बैठी है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि पारिवारिक स्वरूप का व्यक्ति के पारिवारिक निर्णय लेने में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाता से घरेलु निर्णय में उसे मिलने वाले महत्व से संबंधित तथ्यों का संकलन किया है। इन संकलित तथ्यों का उत्तरादाता के पारिवारिक स्वरूप के साथ वर्गीकृत कर उसके मध्य पाए जाने वाले संबंधों को ज्ञात किया गया है, जिसका वर्गीकरण सारणी संख्या 05 में किया गया है।

सारणी संख्या 05: परिवार का स्वरूप तथा परिवार के महत्वपूर्ण निर्णय लेने के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की मनोवृति

परिवार का स्वरूप	मनोवृति			योग
	पुरूष	स्त्री	दोनों	
संयुक्त	06	02	11	19
एकाकी	12	03	16	31
योग	18	05	27	50

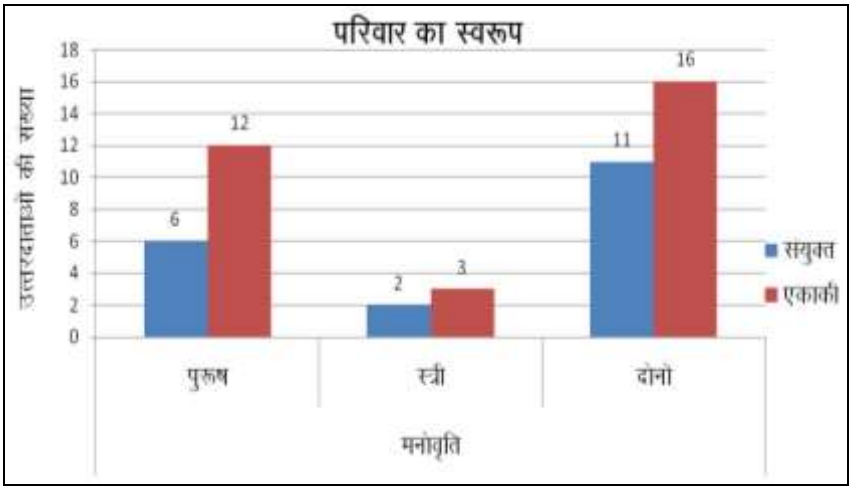

सारणी संख्या 05 से स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार में निवासरत 31.58 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात को स्वीकार करते हैं कि उसके परिवार में घर का महत्वपूर्ण निर्णय पुरूषों के द्वारा लिया जाता है, 10.53 प्रतिशत का मानना है कि या कार्य परिवार की महिलाओं के द्वारा किया जाता है जबकि 57.89 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात को स्वीकार करते है कि उनके परिवार में महत्वपूर्ण निर्णय दोनों मिलकर करते हैं। इसी प्रकार एकाकी परिवार से जुड़े उत्तरदाताओं में से 38.71 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात को स्वीकार करते हैं कि उसके परिवार में घर का महत्वपूर्ण निर्णय पुरूषों के द्वारा लिया जाता है, 09.68 प्रतिशत का मानना है कि उनके परिवार में इस प्रकार के निर्णय महिलाओं के द्वारा किया जाता है जबकि 51.61 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात को स्वीकार करते हैं कि उनके परिवार में महत्वपूर्ण निर्णय दोनों मिलकर करते हैं। इससे यह बात उभरकर सामने आती है कि पारंपरिक रूप से भारत में प्रचलित संयुक्त परिवार व्यवस्था में भी परिवर्तन आया है। आज एकाकी परिवार के समान ही इस परिवार व्यवस्था में भी किसी महत्वपूर्ण मुददे पर विचार करते समय परिवार की महिलाओं के विचारों को भी स्थान दिया जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र बदलते सामाजिक परिवेश में थारू जनजाति के महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर केन्द्रित रहा है। इस अध्ययन के दौरान थारू महिलाओं की उत्पति के संबंध में प्राप्त महत्वपूर्ण विचारों का उल्लेख किया गया है। साथ ही अध्ययन के उद्देश्यों से संबंधित संकलित प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन के दौरान निर्धारित अध्ययन के उद्देश्यों, अध्ययन के दौरान प्राप्त अनुभव तथा तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि बदलते समय के साथ महिलाओं की पारंपरिक कार्य पद्धति एवं उनके दायित्वों में परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन का प्रभाव न केवल उसके कार्य के तरीके एवं जीवन के अन्य पक्षों में देखने को मिलता है बल्कि इसके आधार पर उसके सामाजिक प्रस्थिति में भी परिवर्तन परिलक्षित होता है। इसका एक बड़ा कारण इस समाज के महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में आए परिवर्तन को माना जाता है। इस परिवर्तन के कारण उसकी मनोवृति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है। इस अध्ययन में यह भी उभरकर सामने आया कि चाहे संयुक्त परिवार हो या एकाकी परिवार उसमें महिलाओं के विचारों को भी उचित महत्व दिया जा रहा है। इस अध्ययन के दौरान यह भी पाया गया कि थारू महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन तो आया है लेकिन अपेक्षित रूप में इसकी दर अभी भी कम है। आज भी अन्य समाजों की तुलना में इस समाज की महिलाओं का शैक्षिक स्तर निम्न है। इसमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का अभाव है। इसके परिणामस्वरूप ही योजनाओं की सफलता की दर अपेक्षा से दूर रह जा रही है।

संदर्भ सूची

1. जोशी, योगेश चन्द्र, (1990), थारू जनजाति : एक अध्ययन, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल अप्रकाशित शोध प्रबंध
2. प्रसाद, शारदा, (2018) थारू जनजाति जीवन और संस्कृति, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर
3. रावत, महेन्द्र सिंह, (2015), उत्तराखण्ड समग्र अध्ययन, अरिहन्त पब्लिके''ान (इण्डिया) लिमिटेड, मेरठ
4. रावत हरिकृष्ण, (2006), उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन, जयपुर
5. वर्मा, सुभाष चंद्र, (2011), द स्ट्रगलिंग थारू यूथ : ए स्टडी ऑफ द थारू ट्राइब्स ऑफ इंडिया, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एण्ड एन्थ्रोपोलॉजी
6. Dube SC. Indias Changing Village Rutlage and Kiranpal, Landon, 1955.
7. Majumdar DN. Reses and culture of India, Asia publishing House, Bombay, 1958.
8. Mazumdar Haridas T. Grammer of Sociology, Asia Publishing house New York, 1966.
9. Secord, Buckman. Social Psychology, Mc Graw-Hill, New York, 1964.
10. Yadav MS. Adivasi Samuday me Swasthya ke kuchha Paksha, Rawat Publication, Jaipur, 1994.
11. http://censusindia.gov.in
12. www.uk.gov.in